BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 3, Issue 1, January-March 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

बौद्ध साहित्य व महाकाव्य में धर्म, समाज और राजनीति की दृष्टि : एक ऐतिहासिक अध्ययन

सतवीर राव
पीएच.डी शोधार्थी
गांधी एवं शांति अध्ययन-विभाग
महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिहार

सारांश

ज्ञान-विज्ञान से मानव की समझ निरंतर बढ़ती जा रही है। इसी समझ के कारण ही वह पृथ्वी से चाँद तक की दूरी को कुछ ही मिनट मे माप कर अपनी ज्ञान रूपी आभा को अलग अलग क्षेत्रों में फैला रहा है, परंतु मानव की प्रबल होती इच्छा कब लालच में बदल गयी इसे समझने में पीछे रह गया। परिणाम स्वरूप एक राज्य व राष्ट्र ने वृद्धि तो की परंतु वह ज्यादातर आंकीक डेटा के रूप में ही बढ़ता चला गया जबकि हमारा प्राथमिक उद्देश्य था कि हम उसे गुणात्मक वृद्धि के मानक पर विकास को बढ़ावा देगे। सही अनुक्रम बना रहे इस हेतु गौतम बुद्ध के मानव कल्याण उन्मुख विचारों को समझना अति आवश्यक हो गया है। प्रस्तुत लेख का उद्देश्य बौद्ध साहित्य में संकलित धर्म और समाज के लिए दिए गये उपदेश को लेखबद्ध करना है। साथ ही शासक कनिष्क के शासन काल के बौद्ध दार्शनिक अश्वघोष के लेखन में लिखे राजनीतिक व उनसे जुड़े अन्य पहलू का भी अवलोकन किया गया है।जिनमें मुख्यतः बौद्ध साहित्य में एक शासक का अपने राज्य व प्रजा के लिए नीति निर्माण पक्ष होते है उन पर केंद्रित है। प्रस्तुत लेख में गुणात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया हैं। साथ ही लेखन में वर्णनात्मक विधि का रूपण भी विस्तृत होगा। इस हेतु द्वितीयक स्रोतों के साथ पत्र- पत्रिकाएं का भी उपयोग किया गया है। ताकि शोध पत्र लेखन की उत्कृष्टता अपने सही रूपों में संकलित हो सके।

मुख्य बिन्दु : ज्ञान- विज्ञान, विकास, नीति-निर्माण, कल्याण, उत्कृष्टता, आंकीक डेटा

प्रस्तावना

कपिलवस्तु के राजा शुद्धोधन के पुत्र गौतम, बौद्ध धर्म के संस्थापक थे। जिनका जन्म लगभग 563 ईसा पूर्व में हुआ। सत्य की खोज मे गृह त्याग दिया और बुद्धत्व की प्राप्ति कर आर्य अष्टांगिक मार्ग का प्रचार किया। बुद्ध ने मानवीय जीवन का परम लक्ष्य निर्वाण को बताया, जो शांति, आनंद व सर्व कल्याण उन्मुख जीवन के आधार पर आश्रित होता है। प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिन्तन के स्रोत के रूप में बौद्ध साहित्य का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। गौतम बुद्ध का चिन्तन कई बौद्ध साहित्यों में समाहित हैं जिनका सम्बन्ध भारतीय राजनीतिक चिन्तन से जोड़ा जाता है। 'दीर्घनिकाय' में महात्मा गौतम बुद्ध के दर्शन की जानकारी मिलती है। पूर्व समय में प्रचलित कर्मकांड व आडंबर के कारण कृषकों की आर्थिक स्थिति कमजोर होती गयी जिससे उनके सामाजिक स्तर में भी गिरावट हुआ। जगरूपकता के अभाव के कारण स्त्रियों को अनुक्रम के अनुसार शैक्षणिक अधिकार भी नहीं दिए गये। बौद्ध दर्शन में समाहित आत्म दिपो भवः और मध्यम मार्ग के कारण समाज में चेतना की धारा प्रवाहित हुई, जिससे सामाजिक व राजनैतिक आदर्श एक शासक के जरूरी तत्व हो गये। इसे ही अशोक अपने शिलालेखों में अलग-अलग स्थानों पर प्रचारित व प्रसारित करता है। न सिर्फ भारत में बल्कि श्रीलंका और अफगानिस्तान जैसे अन्य देशों में भी अपने राजनैतिक व शासकीय आदर्शों को बताता है। ग्यारह निपातों में संगठित 'अन्गुत्तरनिकाय' में महात्मा बुद्ध द्वारा भिक्षुओं को उपदेश में कही जाने वाली बातों का वर्णन है। जबकिमदन्त महाना द्वारा सम्भवतः पाँचवीं व छठीं शताब्दी में रचित 'महावंश' नामक ग्रन्थ में मगध के राजाओं की क्रमबद्ध सूची मिलती है तथा शासन सम्बन्धी नीति की भी व्यापक चर्चा की गयी है। 'दिव्यावदान' से परवर्ती मौर्य शासकों एवं शुंग वंश के विषय में जानकारी मिलती है। जो की बौद्ध साहित्य की महत्वा को वर्तमान समय में भी जीवंत रूप में बताता है।

संबंधित साहित्य सर्वेक्षण

कुषाण शासक कनिष्क के शासन काल में बौद्ध दार्शनिक अश्वघोष (ईसवी प्रथम का अंत और द्वितीय का आरंभ), जिसकी प्रसिद्ध रचना बुद्धचरितम् है, जो अठाईस सर्गो का महाकाव्य है। इस महाकाव्य में भगवान बुद्ध के जन्म से लेकर ज्ञान रूपी बुद्धत्व प्राप्ति तक के उपदेशों तथा उनके सिद्धान्तों को काव्यात्मक रूप में लेखन बद्ध मिलता है। वर्तमान समय में इस काव्य के संस्कृत भाषा में 17 सर्ग ही उपलब्ध हैं। इसके तिब्बती तथा चीनी संस्करण 28 सर्गों में उपलब्ध होते है। बुद्धचरितम के षष्ठ सर्ग में अश्वघोष ने जन्म व मरण की ओर संकेत इस तरह से किया है- "जरामरणनाशार्थ प्रविष्टोबऽस्मि तपोवनम्। न खलु स्वअर्गतर्षेण नास्नेहेन मन्यु ना"।। बुद्ध के उपदेशों में आत्म समझ रूपी ज्ञान मार्ग अधिक प्रतिपादित हुआ है इनके लिए सम्यक संकल्प और सम्यक कर्म आदि के आश्रय को आदर्श मार्ग के रूप में इंगित करके प्रज्ञा, शील और समाधि को निवृत्ति का जन उपयोगी पाठ बताया गया है। घर छोड़ने के पश्चात जब राजा शुद्धोधन बुद्ध को अपने साथ ही घर वापस लाने के उद्देश्य से जाते है परंतु बुद्ध कहते है कि मै शान्ति की कामना करता हुआ संसार की लोभ मोहक वस्तु से मुक्त रहना चाहता हूं। 'अहं हि संसारशरे विद्धः विनिः सृतः शान्तिमवाप्नुरकामः' बोधाय जातोऽस्मि जगद्धितार्थम्। बुद्ध ने अपनी प्रिय पत्नी, नवजात पुत्र राहुल , वृद्ध पिता तथा समृद्धि से परिपूर्ण राज पाठ का परित्याग इसलिए किया था कि लोभ जड़ित माया रूपी संसार का सत्य रूप देख सके जो उन्हे निर्वाण उन्मुख दिशा की ओर

@2025 Bihar Shodh Samaagam

लेकर जाएगा, इन्ही उद्देश्य को कारक मानते हुए बुद्ध ने मध्यम मार्ग को अपनाया। मध्यमार्ग की महत्वा को बताने हेतु बुद्ध ने जनमानस को सरल भाषा में उपदेश दिया। बुद्ध के अनुयायियों ने बुद्ध से कपिलवस्तु में चलने का आग्रह किया परन्तु उन्होंने दृढ़ निश्चय से कहा कि 'जन्मजमरणयोरदृष्ट पारः न पुनः कपिलालयं प्रवेष्टाद' इस तरह दृढ़निश्चय बने रहने से उन्होंने मनः स्थिति पर विजय प्राप्त की तथा अमृतत्व की प्राप्ति के साथ संसार का भी उपकार किया। अश्वघोष ने बुद्धचरित में अपने जीवन चरित्र से बुद्ध के उपदेशों के व्यावहारिक व सरल पक्षों का चित्रण किया है। जिस प्रकार हिन्दू धर्म में जो महत्व पवित्र ग्रंथ रामायण का है, वही महत्व बुद्धचरित्र का बौद्ध साहित्य में है। गौतम बुद्ध के अनुकरणीय आदर्श युक्त सन्देश होने के कारण यह काव्य अधिक उपयोगी है।

सौन्दरानन्द बौद्ध महाकाव्य में राजा द्वारा पांच उपायों के प्रयोग का उल्लेख किया गया है, जिनमें समझौता (समा), रिश्वत (दान), मतभेद (भेद) पैदा करना, बल (दण्ड), अपने शत्रुओं के प्रति संयम(निगम) प्रमुख थे। यह शासक के राजनैतिक नीति का आधार होते थे, जिनसे राजा अपने प्रजा व बाह्य राज्यों से संबंधों को मजबूती प्रदान करते थे। इस महाकाव्य में 18 सर्ग है जिसमे बुद्ध के चचेरे भाई नन्द और उनकी पत्नी सुन्दरी की कथा व नन्द के भिक्षु बनने का वर्णन काव्यमय शैली में उल्लेखित है। नन्द का कुछ समय पहले ही विवाह हुआ था जो नवविवाहित युगल थे, कुछ समय बाद ज्ञान रूपी गौतम बुद्ध का कपिलवस्तु में आगमन होता है। बुद्ध स्वयं कपिलवस्तु में अपने पिता के महल के समक्ष उपस्थित होकर भिक्षा मांगते है। जब इसकी सूचना पत्नी यशोधरा को मिलती है तब अपने पुत्र राहुल को ही भिक्षा में दान करती है। साथ ही बुद्ध के चचेरे भाई नन्द ने भी गौतम बुद्ध से प्रव्रज्या अर्थात सांसारिक बंधनों को छोड़कर भिक्षु बनने की चाह की। नन्द की पत्नी सुन्दरी शोक करती ही रह गयी। परंतु नन्द फिर भी बुद्ध के धर्म एवं संघ की शरण मे चले ही गये। इस प्रकार यह ग्रन्थ शान्त रस से युक्त महाकाव्य हैं किन्तु कहीं कहीं यथाप्रसंग श्रंगार रस का भी परिपाक दिखाई पड़ता है। अश्वघोष सम्राट कनिष्क की राजसभा में कवि भी रहे थे। अतः उनको राजदरबार के, राजनीति एवं सामाजिक नीति से संबंधित ज्ञान था। इसी कारण इन दोनों काव्यों में तत्कालीन भारतीय धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक जैसे अन्य महत्वपूर्ण कारको का उचित क्रम में वर्णन मिलता है। इस प्रकार हम कह सकते है कि प्राचीन भारतीय समाज को जानने व समझने में इन दोनों काव्यों का महत्वपूर्ण स्थान है। हालाकि इसके कथानक और बुद्धचरित में भी कुछ समानता व्याप्त है। जिन जिन विषयों का वर्णन बुद्धचरित में नहीं हो सका उन विषयों का सौन्दरानन्दमहाकाव्य में उल्लेख्य मिलता है। इसकी मूल कथा महावग्ग और निदानकथा में भी मिलती है। इसका महत्व व उपयोगी संस्करण डा0 जान्सैटन द्वारा 1928 ई0 में प्रकाशित किया जा चुका है। नेपाल महाराज के संग्रहालय में इसकी प्राचीन हस्तलिखित प्रति सुरक्षित है।

बौद्ध ग्रंथ धम्मपद के प्रथम अध्याय यमक वग्गो मे लेखन मिलता है। “मनोपुब्बङ्गमा धम्मा, मनोसेट्ठा मनोमया। मनसा चे पदुडेन, भासति वा करोति वा। ततो नं दुक्खमन्वेति, चक्कं व वहतो पद” ॥ (धम्मपद-१)

जिसका विश्लेषण कर बताया गया कि मन सभी धर्मों (प्रवृत्तियों) का वाहक है, मन ही उत्तम है, अतः सभी धर्म मन को प्रिय हैं। इस कारण जब कोई मनुष्य अपने मन से व्यथित होकर कोई शब्द बोलता है, अर्थात शरीर से कोई व्यथित कार्य करता है, तब दुःख उसके पीछे ऐसे आता जाता है, जैसे गाड़ी के चक्के से बधे हुए बैल के पैरों के पीछे-पीछे हो। बुद्ध से जुड़ी जातक कथा में उल्लेख मिलता है कि राजा द्वारा अपनी प्रजा पर शासन अपने बच्चों की तरह ही करते थे। राज्य के द्वारा कृषि हेतु उदार शासन का एक समग्र कार्यक्रम अपनाने का उल्लेख मिलता है, साथ ही व्यापारी व औद्योगिक वर्गो के संरक्षण की पहल की गयी, ताकि वे करो का भुगतान उचित रूप से कर सके, जिसका लाभ राज्य,सेना, किसान, निर्धन वर्ग सहित सभी को उनके अनुसार प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से मिल सके। राज्य मे कराधान के ठोस व उचित सिद्धांत का भी वर्णन मिलता है।

धर्म-नीति दर्शन का समेकित रूप

प्राचीन समय में धर्म और नीति का एक ही स्वरूप था, एक शासक के लिए धर्म का पालन करना ही उसका प्राथमिक कर्तव्य होता था, क्योंकि धर्म नीति में सुखमय जीवन, प्रजा कल्याण, दंड नीति, प्रशासन नीति आदि बातों को भी उल्लेखित किया जाता था। महात्मा बुद्ध के समय दार्शनिक इतिहास में बदलावों का समय काल था। नये नये विचारों की आगमन हुआ। जो अपने अपने अनुसार बुद्धिवाद का सहारा लेते थे। संशयवाद और अन्ध विश्वासों की बढ़ती रूपता के कारण मोक्ष को प्राप्त करना कठिन होता चला गया। गृहस्थ जीवन में अनेक विघ्न बताये गये। यह साधना उनके लिए नहीं है। अन्य जो भी स्वर्गोपपत्ति की चाह रखते हैं। उनके लिए शील की शिक्षा ही सर्वोच्च मार्ग है। त्रिशरण गमन की विधि उपासकों के लिए है जो उपासक होना चाहता है। वह बुद्ध, धर्म और संघ की शरण में ही उपासकों को कल्याण है। "बुद्धं शरणं गच्छामि अर्थात बुद्ध (ज्ञान) की शरण में जाये, धर्म शरणं गच्छामि अर्थात धम्म (मानवीय कल्याण) की शरण मे जाये जबकि संघ शरणं गच्छामि का अर्थ हम सद्गुण की शरण में जाये।" यही त्रिरत्न हैं, जिनको अपनाकर व्यक्ति ना ही सिर्फ अपनी राजनीतिक दृष्टि से बल्कि समाज में भी अपने जन कल्याण उन्मुख कर्तव्यों को आचरित करने से कभी भी भटकेगा नहीं। अतः जब धर्म परक नैतिक आचरण व्यक्ति या समूह के कर्तव्यों में समाहित हो जाता है तब चाहे वह राजनैतिक कार्य हो या सामाजिक व वैधानिक कार्य हो। सभी कार्य अपने अनुक्रम के अनुसार नियोजित होते चले जाते है।

बौद्ध साहित्य में समाज को एकत्व करने वाले कारक

बौद्ध दर्शन में समाज जो भी प्रतिबिम्ब होता है वह एक बेहतर दिशा में उन्नयन होने के लिए होता हैं। एक राजा अपने नीति निर्माण नियोजन व धर्म जनित आचरण का सही रूप में पालन करके ही अधिक समय तक प्रजा को खुशहाली दे सकता। जिससे की वह निरंतर सही दिशा में बढ़ता ही जाये, इस हेतु पाँच

बिन्दु के आधार को समझना होगा। जिनके आधार पर एक शासक, समाज को संगठित और समायोजित करता है। भले ही उनके स्वरूपों में विभिन्नता समाहित रहती है, परंतु उसके समायोजित प्रयास सभी को साथ में लेकर चलने से ही है। जिनमें प्रथम कारक, गणतंत्र का समर्थन करना है। बौद्ध ग्रंथ अंगुतरनिकाय और जैन ग्रंथ भगवती सूत्र में 16 महाजनपद का उल्लेख मिलता हैं। ये आधार ही लोकतांत्रिक गणराज्य बनने की ओर पहल करता हैं जो सही व सरल क्रम में मानवीय पहल की ओर संकेत रहता हैं। जिसका प्राचीन गौरव एथेंस व यूनान की परम्परा से भी अलग रहा है। जो भारत की मूल चिंतन की ओर से ही आते रहते हैं। गणतंत्र राज्य की शासन व्यवस्था से उसी क्रम से निर्वाचित हो, जिसे समझना और जानना उसी रूप में सार्थक मना जाता रहा है, इसी आधार पर राजा कौन होगा जिसे जान पाना उतना ही आसान होगा, जितना राज्य के महाजनपद के उपक्रम पर व्यतीत करने की आतुर होता हैं। विज्ञान के आधार पर तार्किक बहस को मूल केंद्र मानकर ही जाना और पहचाना गया है। जो उचित रूप से सक्षम भी है और सुचारु भी, तभी तो सार्थक व सचेत हो सकता है। ज्ञान-विज्ञान युक्त चयन प्रणाली के पैमाने जो अपनी कार्य बल हेतु निर्धारण कर सके, जो सही और कारगर दोनों हो सकता है। प्रथम कारक से जुड़ा दूसरा कारक परंपरा से जुड़ा हुआ था। राजा वंशानुगत नहीं होता बल्कि उसका चयन चुनाव प्रणाली के आधार पर होता था। महाजनपद काल में राजा का चयन लाटरी प्रणाली या चुनाव के आधार पर शासक को चुना जाता रहा हैं। प्राचीन समय में प्रचलित सिद्धांत जिसे राज्य का समझौतावादी सिद्धांत कहा गया, जो ईश्वर उन्मुख है। इस विकल्प प्रणाली में यह देखते है कि राज्य के बनने का क्या आधार है, राज्य कैसे बना है, किस उपक्रम पर राज्य को बनाया जाता है। क्या ईश्वर के द्वारा बनाया गया या किसी चेतना के बल पर इसे अनुशील प्राप्त हुआ है। जो राज्य का विकास हुआ है, वो किसी एक अनुग्रह पर बना हुआ है। उसी कड़ी के अंतर्गत यह बताया जाता है कि ईश्वर की अनुकंपा से राज्य बना होता है। जो सभी को देखता है, उसी ने सबको बनाया है। राज्य के समझौता सिद्धांत को जान और समझ के आधार पर ही राज्य के सर्वोच्चता सिद्धांत बनाया गया है। समता, स्वतंत्रता और न्याय, उसी कड़ी में यह तीसरा राजनीतिक चिंतन है बुद्ध यही कहते है कि राजनीतिक चिंतन में समानता ही वह आधार है जिसके उपक्रम पर हम सभी अपनी पहुच बना सकते है, जो कारगर भी होगा और सभी के लिए सहायक भी होगा। चाहे वह सामाजिक, राजनीतिक हो या आर्थिक स्वरूप हो, हम सभी से समानता का व्यवहार किया जाये, चूंकि सभी मनुष्य किसी जाति, वर्ण या जन्म के आधार पर विभेद नहीं है तो फिर एक मनुष्य अन्य मनुष्य से क्यों असमानता करे। यही तो वैधानिक नीति परक दर्शन का मूल स्वरूप है। जबकि स्वतंत्रता व्यक्ति को जीवंत का एहसास कराता है। इसी स्वतंत्रता को गौतम बुद्ध ने अपने वैचारिक चिंतन के माध्यम से व्यक्त किया, जब बुद्ध ने अपने शिष्य आनंद के आग्रह को स्वीकार कर लिया, जिसमे यह सहमति बनी कि अब महिलाए भी बौद्ध संघ में शामिल हो सकती है। जिसकी स्वीकृति से सामाजिक न्याय पर भी बल मिला। जिसे धार्मिक व सांस्कृतिक आजादी कहते है, इसी संदर्भ को हम जान पाने में सक्षम हो पाने की ओर कारगर हो सकते है।

बुद्ध आज किसी देव, किसी सत्ता व किसी विशेष धर्म के काल्पनिक गुलामी से मुक्ति की बात करते है। परंतु इन आदर्शों के होते हुए भी कुछ प्रश्न उभर कर आते है, क्या वर्तमान में व्यक्ति अपनी इच्छा से धर्म, जाति, लिंग को मानने की स्वीकृति प्राप्त है या विवाह करने की। यह बात तो सही है कि हम राजनीतिक रूप से किसी बाह्य शक्ति के गुलाम नहीं है लेकिन सामाजिक रूप से धर्म के तो कही जाति व रंग-रूप व क्षेत्र के गुलाम है। कही पर महिला व पुरुष के आधार पर विभेद किया जाता है। बुद्ध के द्वारा दिए अष्टांगिक मार्ग मे सम्यक आजीविका के उपदेश दिए गये है जो यह बताता है कि किसी के अहित में अपना हित के कार्य न करे। इस तरह से हम आध्यात्मिक व धार्मिक लोकतंत्र स्थापित कर पाने में सक्षम हो पाए है। चतुर्थ कारक लैंगिक समतावाद है, महिला व पुरुष को बुद्ध ने भी कुछ समय के पश्चात अपने संघ में शामिल कर लिया उन्हे भी भिक्षुणी बनने का समान अवसर दिया, जिसे बाद के समय में आयोजित बौद्ध संगीतियों में भी संकलित करवाया। इसी के आधार पर ही तो अशोक से लेकर कनिष्क तक के शासकों ने अपने नीति नियोजन में महिला को पूर्व की भांति पूजनीय बनाकर उसमें आस्था प्रकट की। उसी का एक अन्य रूप आचार्य चतुरसेन की पुस्तक में मिलता है। बौद्ध साहित्य **वैशाली की नगरवधू (बौद्ध कालीन ऐतिहासिक उपन्यास – 2021)' के लेखक आचार्य चतुरसेन** इस उपन्यास के माध्यम से लेखक ने मगध और वैशाली में साम्राज्य और गणतंत्र के टकराव को बताया गया है। जिसमें प्राचीन ऐतिहासिक घटनाओं के माध्यम से यह संदेश दिया गया है कि राजतंत्र और तानाशाह की जीत दुश्मन को पूरी तरह बर्बाद कर देती है। जबकि जनप्रतिनिधियों और लोकतंत्र की जीत हिंसक नहीं होती। **नगरवधू आम्रपाली अपने सौंदर्य की उपेक्षा एवं भरे महल का परित्याग कर बुद्ध की शरणागत होकर बौद्ध भिक्षु बनने की ओर अग्रमित हो गयी। संघ में कोई पराया नहीं ना ही कोई खूबसूरत व कुरुप है और न कोई निर्बल एवं अछूत है। शासक की प्रजा कल्याण नीति में पाँचवा कारक** राजनीति सहिष्णुता, लोकतांत्रिक मूल्य व धम्म है, पूर्व प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने कहा था कि सहिष्णुता केवल उन लोगों के प्रति नहीं जो हमारे समर्थक है या हमारे किसी संगठन के सदस्य है बल्कि उनके प्रति भी जो हमारे विरोधी है, जो हमारे समर्थन में नहीं या हमारे गुट के नहीं हैं सभी के प्रति सहिष्णुता का भाव रखना है। व्यक्ति को अपने आप में लोकतंत्र होना चाहिए, जिसमे व्यक्ति के कल्याण के प्रति भाव सभी को होना चाहिए। बुद्ध इन्ही आदर्शों को स्थापित करने के लिए पंचशील सिद्धांत दिए। जिनमे सत्य, अहिंसा, शांति आदि कारकों पर बल देते हुए प्रज्ञा, शील और समाधि को अपनाने के मार्ग पर चलने को कहते है। तभी न सिर्फ व्यक्ति, समाज का बल्कि राजनीतिक परिदृश्य का भी सकारात्मक दिशा में उद्धार होगा। एक संगठित धर्म के रूप में भारत से विलुप्त हो जाने के पश्चात बौद्ध दर्शन ने भारत के इतिहास पर अपनी पद् चिन्ह छोड़ी है।

शोध प्रविधि – प्रस्तुत शोध पत्र लेखन में गुणात्मक शोध प्रविधि का उपयोग किया गया है। जिसके अंतर्गत शोध के उद्देश्यों को गुणात्मक आयाम देने हेतु ऐतिहासिक व वर्णात्मक अनुसंधान का भी उपयोग किया गया है। जो मुख्यतः द्वितीयक स्त्रोतो पर आधारित होगा, जिसमे पत्र- पत्रिका आदि का प्रयोग किया गया है।

निष्कर्ष व सुझाव

मनुष्य का जीत जाना निश्चित ही सुखद होता है, लेकिन जीवन मे जीतना ही सब कुछ नहीं होता है। बदलती परिस्थिति में जीत और हार के बीच इतना फासला बढ़ गया है, जैसे जिंदगी और मौत का अर्थात जीत जाना ही जिंदगी और हार जाना मृत्यु को प्राप्त कर लेना है। जिंदगी में अपने व्यक्तित्व का परीक्षण करते समय यह जोड़ घटाव करना सार्थक नहीं है कि आप कितनी बार जीते या हारे है, आनंद प्राप्ति यह देखने में भी हो सकती है कि आप कहाँ और कैसे किसी उचित जगह पहुचते है। व्यक्ति की महत्वाकांक्षा बढ़ती ही जा रही है, एक निर्धन व्यक्ति अपनी नजर से धनवान को सुखी मानता है वही वो अपने से बड़े शक्तिशाली को उसकी संपन्नता के कारण सुखी मानता है। शक्तिशाली व्यक्ति या समूह किसी अन्य को देखकर तुलना करता है कि हमसे ज्यादा दूसरा कोई सुखी है जबकि हमे समय रहते यह समझना होगा कि सुखमय जीवन जीने के लिए संतोष व संतुष्टि ही एक मात्र साधन है। जिससे न सिर्फ व्यक्ति समूह बल्कि राजनैतिक पद पर आसीन शासक-प्रशासक को भी अपने नीति नियोजन में भी पालन करवाना चाहिए। बौद्ध साहित्य में संकलित मध्यम मार्ग का जीवंत आचरण सुखमय जीवन की प्रबलता को छठी शताब्दी ईसा पूर्व में ही समझ गया परंतु मानव समूह इसे पूरी तरह समझने में देर करता ही जा रहा है। बुद्ध द्वारा दिए गये शील, समाधि व प्रज्ञा का अनुपालन करके ही हम राजनीति व सामाजिक कार्यों में अधिक समय तक आनंद की प्राप्ति कर सकते है।

@2025 Bihar Shodh Samaagam

संदर्भ ग्रंथ सूची

- श्री सत्यनारायण गोयंका, राजधर्म कुछ ऐतिहासिक प्रसंग (बौद्ध वाणी के परिपेक्ष्य में 2004) द्वितीय संस्करण
- सिंह रामजी, 'भारतीय दर्शन और धर्म : चिंतन एवं अनुचिंतन' (2017) अर्जुन पब्लिकेशन दिल्ली
- डॉ० श्रीवास्तव, के०सी० (दशम संस्करण – 2005) प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, यूनाईटेड बुक डिपो, इलाहाबाद।
- धम्मपद, विपश्यना विशोधन विन्यास, धम्मगिरि इगतपुरी, महाराष्ट्र
- झा. दिजेन्द्र नारायण, श्री मालीकृष्ण मोहन (2001), प्राचीन भारतकाइतिहास, दिल्लीविश्वविद्यालय, दिल्ली।
- एडेलग्लास, विलियम, गारफील्ड, जे (2009), बौद्ध दर्शनः आवश्यक पठन, न्यूयॉर्क: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, आईएसबीएन 0-19-532817-5
- गोम्ब्रिच, रिचर्ड एफ, (1997), बौद्ध धर्म की शुरुआत कैसे हुई, मुंशीराम मनोहरलाल
- कालूपहाना, डेविड जे. (1992), बुद्धिस्ट साइकोलॉजी के सिद्धांत, दिल्लीः श्री सतगुरु प्रकाशन
- कालूपहाना, डेविड जे. (1994), बौद्ध दर्शन का इतिहास, दिल्लीः मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड
- पड्यू, डैनियल (1992), तिब्बती बौद्ध धर्म में बाद-विवाद, स्नो लायन प्रकाशन, आईएसबीएन 978-0-937938-76-8
- उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, 'मास्टर आफ आर्ट्स-संस्कृत' (2022), गद्य एवं पद्य काव्य-भाग 2, उ०मु० वि०, हल्द्वानी, ISBN No. -978-93-84632-26-7, https://www.uou.ac.in
- https://tipitaka.org
- वेटर, टिलमन (1988), प्रारंभिक बौद्ध धर्म के विचार और ध्यान संबंधी अभ्यास, ब्रिला
- अज्ञात, डॉ सुरेन्द्र, 'सौंदरनन्दः एक अध्ययन (2012)', सम्यक प्रकाशन, दिल्ली